

UPPCS

20 January, 2025

प्रश्न-1. भारतीय सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक महत्व का विश्लेषण करें।
(125 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

उत्तर प्रदेश (UP), जिसे "भारतीय सभ्यता का उद्गम स्थल" कहा जाता है, विविध संस्कृतियों, धर्मों और दर्शन का संगम रहा है, जिन्होंने भारतीय लोकाचार को आकार दिया।

मुख्य योगदान

- ❖ **प्राचीन सभ्यताओं का उद्गम:** उत्तर प्रदेश सिंधु-सरस्वती सभ्यता के पूर्वी विस्तार का केंद्र था और बाद में यह गंगा-यमुना दोआब के लिए एक प्रमुख क्षेत्र बन गया, जिससे कृषि और शहरी विकास को बढ़ावा मिला।
- ❖ **धार्मिक महत्व:** यह हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म और जैन धर्म का जन्म स्थल है, जिसमें वाराणसी, अयोध्या और सारनाथ जैसे पवित्र स्थल हैं। यूपी में कुंभ मेला आयोजित होता है, जो वैश्विक स्तर पर सबसे बड़ी आध्यात्मिक सभा है।
- ❖ **सांस्कृतिक योगदान:** मुगल कला और वास्तुकला (जैसे ताज महल) का उत्थान हुआ। यह समृद्ध शास्त्रीय संगीत, कथक नृत्य और तुलसीदास के रामचरितमानस जैसी साहित्यिक धरोहरों का केन्द्र है।
- ❖ **राजनीतिक महत्व:** यह क्षेत्र 1857 के विद्रोह का केंद्र था और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के बाद के समय में भी इसने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे आधुनिक भारतीय राष्ट्रवाद को आकार मिला।

निष्कर्ष

उत्तर प्रदेश का ऐतिहासिक महत्व इसके धर्म, संस्कृति और राजनीति में विविध योगदानों में निहित है, जो भारतीय सभ्यता को परिभाषित करते हैं।

UPPCS

20 January, 2025

प्रश्न-2. उत्तर प्रदेश में ऐतिहासिक स्मारकों की वास्तुकला का महत्व और इनके संरक्षण में आने वाली चुनौतियों का विश्लेषण करें।
(200 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

उत्तर प्रदेश, जिसे अक्सर भारत का हृदय कहा जाता है, सदियों से चली आ रही समृद्ध वास्तुकला विरासत को समेटे हुए है। यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल 'ताज महल' और वाराणसी के धार्मिक घाटों से लेकर उत्तर प्रदेश के स्मारकों में राजवंशों के प्रभाव, धार्मिक महत्व और सांस्कृतिक विविधता का मिश्रण देखा जा सकता है। हालांकि, इन वास्तुकला चमत्कारों को पर्यावरणीय हानि, शहरीकरण और अपर्याप्त रखरखाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो इनके संरक्षण को खतरे में डालते हैं।

उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक स्मारकों का वास्तुशिल्प महत्व

- ❖ **सांस्कृतिक विविधता का प्रदर्शन:** यूपी के स्मारक हिंदू, बौद्ध, जैन, इंडो-इस्लामिक और औपनिवेशिक वास्तुकला का संगम हैं, जो क्षेत्र की सांस्कृतिक समरसता का प्रतीक हैं। उदाहरण: ताज महल (मुगल वास्तुकला) और वाराणसी का दशाश्वमेध घाट (हिंदू वास्तुकला)।
- ❖ **राजवंशीय प्रभाव का प्रतिनिधित्व:** स्मारक मौर्य, गुप्त, मुगल और अवध के नवाबों के योगदान को उजागर करते हैं। उदाहरण: सारनाथ स्तूप (मौर्य काल) और बड़ा इमामबाड़ा (अवधी वास्तुकला)।
- ❖ **मुगल वास्तुकला की उत्कृष्ट कृतियां:** ताज महल, जो यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है, इंडो-इस्लामिक वास्तुकला के शिखर को दर्शाता है। अकबर की राजधानी, फतेहपुर सीकरी फारसी और भारतीय डिजाइनों का मिश्रण दर्शाता है।
- ❖ **धार्मिक और आध्यात्मिक धरोहर:** अयोध्या, मथुरा और वाराणसी में स्थित स्मारक धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाते हैं। उदाहरण: काशी विश्वनाथ मंदिर (हिंदू वास्तुकला) और आगरा की जामा मस्जिद (इस्लामिक वास्तुकला)।
- ❖ **कला और इंजीनियरिंग में योगदान:** उत्तर प्रदेश की वास्तुकला में उन्नत शिल्प कौशल का प्रदर्शन होता है। इसका प्रमुख उदाहरण बुलंद दरवाजा है, जो दुनिया का सबसे बड़ा द्वार है, और असाधारण इंजीनियरिंग कौशल को दर्शाता है।

स्मारकों के रखरखाव/संरक्षण में चुनौतियां

- ❖ **पर्यावरणीय निम्नीकरण:** वायु प्रदूषण के कारण संरचनात्मक क्षय और रंग-विकृति होती है, उदाहरण के लिए, औद्योगिक उत्सर्जन के कारण ताजमहल के संगमरमर का पीला पड़ना।
- ❖ **अतिक्रमण और शहरीकरण:** शहरी विकास के कारण अतिक्रमण होते हैं, जैसे वाराणसी घाटों के पास अनधिकृत निर्माण।
- ❖ **उपेक्षा और देखभाल की कमी:** संसाधनों की कमी के कारण उपेक्षा होती है, जैसे चुनार किले का खराब रखरखाव।
- ❖ **अत्यधिक पर्यटन:** अत्यधिक आगंतुकों के कारण क्षति होती है, जैसे ताज महल की संरचनात्मक समस्याएं।
- ❖ **जलवायु परिवर्तन:** अनियमित मौसम स्मारकों को नुकसान पहुंचाता है, जैसे फतेहपुर सीकरी के बलुआ पत्थर का क्षरण।
- ❖ **जागरूकता की कमी:** पर्यटकों और स्थानीय लोगों द्वारा की गई तोड़-फोड़ और अपशिष्ट निस्तारण धरोहर को नुकसान पहुंचाते हैं, जैसे आगरा किले की दीवारों पर भित्ति-चित्रण।
- ❖ **कानूनी मुद्दे:** अतिव्यापी क्षेत्राधिकार संरक्षण प्रयासों में बाधा डालते हैं।

भविष्य की राह:

उत्तर प्रदेश के स्मारकों के संरक्षण के लिए सरकार, तकनीकी हस्तक्षेप, समुदाय भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का बहुपक्षीय दृष्टिकोण आवश्यक है। सार्वजनिक-निजी साझेदारी, सतत पर्यटन और जागरूकता अभियानों के माध्यम से प्रभावी संरक्षण सुनिश्चित किया जा सकता है।

निष्कर्ष:

उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक स्मारक भारत की समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर के स्थायी प्रतीक हैं, जो समय के साथ भारतीय संस्कृति के अद्वितीय योगदान को दर्शाते हैं।

UPPCS

20 January, 2025

प्रश्न-3. भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उत्तर प्रदेश की भूमिका का विश्लेषण करें तथा 1857 के विद्रोह और इसके बाद के विद्रोह के दौरान इसके योगदान पर प्रकाश डालें। (125 शब्द)

उत्तर:

भूमिका:

उत्तर प्रदेश ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में केन्द्रीय भूमिका निभाई, यह 1857 के विद्रोह का केन्द्र था तथा बाद के राष्ट्रवादी आंदोलनों में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसके ऐतिहासिक शहरों, नेताओं और घटनाओं ने भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति की दिशा तय की।

1857 के विद्रोह के दौरान भूमिका:

- ❖ **विद्रोह का केंद्र:** उत्तर प्रदेश के मेरठ, कानपुर, झाँसी और लखनऊ जैसे प्रमुख शहरों में बड़े पैमाने पर विद्रोह हुआ। विद्रोह मेरठ से शुरू हुआ जब सिपाहियों ने ब्रिटिश आदेशों का पालन करने से मना किया, जिससे एक राष्ट्रीय विद्रोह की शुरुआत हुई।
- ❖ **मुख्य नेता:** झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे और बेगम हजरत महल ने ब्रिटिश सेना के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी। लखनऊ की घेराबंदी ने औपनिवेशिक उत्पीड़न के विरुद्ध उग्र प्रतिरोध का प्रदर्शन किया।

1857 के बाद के योगदान

- ❖ **क्रांतिकारी आंदोलनों का केन्द्र:** उत्तर प्रदेश क्रांतिकारी समूहों जैसे हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) का केंद्र बन गया, जिसका नेतृत्व भगत सिंह और चंद्रशेखर आजाद ने किया।
 - + लखनऊ के निकट काकोरी ट्रेन डकैती (1925) ने इस क्षेत्र के क्रांतिकारी उत्साह को उजागर किया।
- ❖ **जन आंदोलन में भूमिका:** वाराणसी, इलाहाबाद (अब प्रयागराज), और कानपुर जैसे शहरों ने असहयोग और भारत छोड़ो आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया।
 - + मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू और मौलाना अबुल कलाम आजाद जैसे नेता इसी क्षेत्र से उभरे।

निष्कर्ष:

1857 के विद्रोह से लेकर भारत छोड़ो आंदोलन तक उत्तर प्रदेश का योगदान, भारत के स्वतंत्रता संग्राम में केन्द्रीय भूमिका को दर्शाता है। इसके नेता, शहर और घटनाएँ भारत के राष्ट्रीय इतिहास का अभिन्न हिस्सा हैं।

UPPCS

20 January, 2025

प्रश्न-4. ग्रामीण उत्तर प्रदेश की सामाजिक संरचना को आकार देने में त्योहारों, मेलों और लोक परंपराओं की भूमिका का परीक्षण करें। (200 शब्द)

उत्तर:

भूमिका

त्योहार, मेले और लोक परंपराएं उत्तर प्रदेश के ग्रामीण समाज के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक संरक्षण और आर्थिक गतिविधियों के रूप में कार्य करते हुए ग्रामीण समुदायों में रिश्तों, पदानुक्रमों और सामूहिक पहचान को आकार देती हैं।

त्योहारों की भूमिका:

- ❖ **सांस्कृतिक एकता:** होली, दीवाली, ईद और मकर संक्रांति जैसे त्योहार विविध समुदायों के लोगों को एक साथ लाते हैं, जैसे ईद के दौरान हिंदू और मुस्लिम आपस में मिठाइयां और शुभकामनाएं साझा करते हैं।
- ❖ **परंपराओं का संरक्षण:** पूर्वी उत्तर प्रदेश में व्यापक रूप से मनाए जाने वाले छठ पूजा जैसे धार्मिक त्योहार प्रकृति के प्रति सम्मान और पारिवारिक बंधन जैसे पारंपरिक मूल्यों को कायम रखते हैं।

मेलों का प्रभाव:

- ❖ **आर्थिक गतिविधियां:** प्रयागराज में माघ मेला और मेरठ में नौचंदी मेला जैसे मेले कारीगरों और व्यापारियों के लिए अवसर प्रदान करते हैं, जिससे ग्रामीण आजीविका को बढ़ावा मिलता है। इन मेलों में स्थानीय शिल्प का प्रदर्शन होता है तथा सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा मिलता है।
- ❖ **सामाजिक संपर्क:** मेले संस्कृतियों के संगम के रूप में कार्य करते हैं तथा सामूहिक भागीदारी के माध्यम से जाति और वर्ग की बाधाओं को तोड़ते हैं।

लोक परंपराओं का महत्व:

- ❖ **सामाजिक संवाद:** गांवों में लोक गायन, नृत्य और कथाओं जैसे आयोजनों से लोक संस्कृति को बढ़ावा मिलता है।
- ❖ **सांस्कृतिक पहचान:** इन परंपराओं से ग्रामीण समाज की सांस्कृतिक पहचान को जीवित रखा जाता है, जैसे बन्ना-बन्नी का लोक नृत्य।

निष्कर्ष:

उत्तर प्रदेश के ग्रामीण समाज में त्योहारों, मेलों और लोक परंपराओं का गहरा सांस्कृतिक और सामाजिक प्रभाव है। ये न केवल सांस्कृतिक पहचान बनाए रखते हैं बल्कि आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहित करते हैं।

UPPCS

20 January, 2025

प्रश्न-5. समावेशी विकास के समाधानों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, ग्रामीण उत्तर प्रदेश में सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का विश्लेषण करें। (125 शब्द)

उत्तर:

ग्रामीण उत्तर प्रदेश उच्च गरीबी, बेरोजगारी, खराब बुनियादी ढांचा तथा शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की अपर्याप्त उपलब्धता से जूझ रहा है। इन समस्याओं को सुलझाने के लिए समावेशी वृद्धि और सामाजिक-आर्थिक समानता के लिए सतत समाधान की आवश्यकता है।

ग्रामीण उत्तर प्रदेश में सामाजिक-आर्थिक चुनौतियां:

- गरीबी और बेरोजगारी:** लगभग 37.79% ग्रामीण जनसंख्या गरीबी रेखा से नीचे रहती है (नीति आयोग, 2023)। मौसमी बेरोजगारी व्यापक रूप से फैली हुई है।
- शिक्षा में कमी:** खराब साक्षरता दर, जहां महिला साक्षरता 57% है (जनगणना 2011)।
- स्वास्थ्य में कमी:** ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की कमी है, जहां प्रति 1,000 लोगों पर केवल 1.9 बेड हैं (NFHS-5)।
- कृषि संबंधित समस्याएं:** भूमि के छोटे-छोटे टुकड़े और मानसून पर निर्भरता उत्पादकता में रुकावट डालते हैं।
- बुनियादी ढांचे में अंतर:** खराब संपर्क और बिजली की उपलब्धता आर्थिक विकास को सीमित करते हैं।

समावेशी विकास के समाधान:

- कौशल विकास:** ग्रामीण युवाओं को शामिल करते हुए स्किल इंडिया मिशन का विस्तार करना।
- शिक्षा सुधार:** पीएम ई विद्या (PM eVidya) के तहत डिजिटल शिक्षा को सशक्त बनाना।
- स्वास्थ्य देखभाल पहलें:** आयुष्मान भारत का विस्तार करना और ग्रामीण प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (PHCs) की स्थापना करना।
- कृषि आधुनिकीकरण:** जैविक कृषि और फसल विविधता को बढ़ावा देना।
- बुनियादी ढांचा:** प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY) के तहत ग्रामीण सड़कों पर निवेश करना और सौभाग्य योजना के तहत विद्युतीकरण करना।

निष्कर्ष:

ग्रामीण उत्तर प्रदेश के समावेशी विकास के लिए सशक्तीकरण, बुनियादी ढांचे और सार्वजनिक भागीदारी पर केंद्रित एक एकीकृत दृष्टिकोण महत्वपूर्ण है।